भारतीय ज्ञानपीठ

Announcement

60TH JNANPITH AWARD

FOR 2025

R.VAIRAMUTHU

TAMIL WRITER

Justice Vijender Jain, President
(Ex- Chief Justice High Court)
Mrs. Trishla Jain, Life Trustee
(Artist, Delhi)
Smt. Aparajita Jain Mahajan, Life Trustee
(Artist, Pune)
Justice S. N. Aggarwal, Trustee
(Ex-Justice, Delhi High Court)
Shri Vineet Jain, Trustee
(M. D. Times of India)
Shri S. K. Jain, Trustee
(Retd. IPS, Delhi)
Shri Swadesh Bhushan Jain, Trustee
(Executive President, Punjab Kesari, Delhi)
Shri Mudit Jain, Trustee
(Industrialist, Mumbai)
Shri A.P.S. Khati, Trustee
(Executive Editor, NBT, Delhi)
Shri Raunak Mahajan, Trustee
(Industrialist, Pune)
Shri Akhilesh Jain, Managing Trustee
(Industrialist, Delhi)

भारतीय ज्ञानपीठ
Bharatiya Jnanpith

प्रेस विज्ञप्ति

तमिल साहित्यकार आर. वैरामुथु को वर्ष 2025 का 60वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किए जाने की घोषणा

नई दिल्ली, 14 मार्च 2026

भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा यह घोषणा की गई है कि वर्ष 2025 के लिए 60वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रतिष्ठित तमिल साहित्यकार आर. वैरामुथु को प्रदान किया जाएगा। उन्हें तमिल साहित्य में उनके उल्लेखनीय योगदान, रचनात्मकता और विशिष्ट काव्यात्मक अभिव्यक्ति के लिए यह सम्मान दिया जा रहा है।

यह निर्णय भारतीय ज्ञानपीठ की चयन समिति की बैठक में लिया गया। इस समिति में प्रख्यात विद्वानों और साहित्यकारों का समावेश रहा, जिनमें प्रो. प्रतिभा राय की अध्यक्षता में अन्य सदस्य — श्री माधव कौशिक , श्री दामोदर माउजो, डॉ॰ सुरंजन दास, डॉ॰ ए. कृष्णा राव, श्री प्रफुल्ल शिलेदार, डॉ॰ केसु भाई देसाई, डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा, , डॉ. के. श्रीनिवास राव और ज्ञानपीठ के वरिष्ठ प्रकाशन अधिकारी डॉ. महेश्वर शामिल थे।

बैठक के प्रारम्भ में ज्ञानपीठ के अध्यक्ष जस्टिस विजेंद्र जैन तथा ज्ञानपीठ के निदेशक मधुसूदन आनंद को दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई।

तमिल के प्रसिद्ध कवि, गीतकार और लेखक आर. वैरामुथु का जन्म 13 जुलाई 1953 को तमिलनाडु में हुआ। वे समकालीन तमिल साहित्य के महत्वपूर्ण रचनाकारों में गिने जाते हैं। उनकी कविताओं और लेखन में मानवीय संवेदना, सामाजिक सरोकार और प्रकृति के प्रति गहरी संवेदनशीलता का प्रभावशाली चित्रण मिलता है।

वैरामुथु ने कविता, गीत और गद्य—तीनों क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दिया है। उनकी काव्य रचनाएँ अपनी मौलिकता, भावनात्मक गहराई और सांस्कृतिक चेतना के कारण पाठकों के बीच अत्यंत लोकप्रिय हैं। तमिल भाषा और साहित्य के विकास में उनके योगदान को व्यापक रूप से सराहा गया है। उन्होंने 37 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें कविता संग्रह और उपन्यास शामिल हैं। उनकी प्रमुख साहित्यिक कृतियों में कल्लिकाट्टू इथिहासम, करुवाची काव्यम, तन्नी देसम, और मोंद्रम उलागा पोर तन्नी देसम, और मोंद्रम उलागा पोर (तीसरा विश्व युद्ध) शामिल हैं।

आर. वैरामुथु को उनके ४० साल के करियर में सात बार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार (सर्वश्रेष्ठ गीतकार), पद्म भूषण (2014), और पद्म श्री (2003), साहित्य अकादमी पुरस्कार (2003): उनके उपन्यास 'कल्लिकट्टू इथिहासम' के लिए तथा तमिलनाडु सरकार द्वारा कला में योगदान के लिए कलैमामणि पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

ज्ञानपीठ पुरस्कार • ज्ञानगरिमा मानद् अलंकरण • मूर्तिदेवी पुरस्कार • नवलेखन पुरस्कार
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली-110 003
फोन : 011-2462 6467, 4152 3423
18, Institutional Area, Lodhi Road, New Delhi-110003
e-mail: sales@jnanpith.net, marketing@jnanpith.net, nayagyanoday@gmail.com, bjnanpith@gmail.com
www.jnanpith.net

Justice Vijender Jain, President
(Ex- Chief Justice High Court)
Mrs. Trishla Jain, Life Trustee
(Artist, Delhi)
Smt. Aparajita Jain Mahajan, Life Trustee
(Artist, Pune)
Justice S. N. Aggarwal, Trustee
(Ex-Justice, Delhi High Court)
Shri Vineet Jain, Trustee
(M. D. Times of India)
Shri S. K. Jain, Trustee
(Retd. IPS, Delhi)
Shri Swadesh Bhushan Jain, Trustee
(Executive President, Punjab Kesari, Delhi)
Shri Mudit Jain, Trustee
(Industrialist, Mumbai)
Shri A.P.S. Khati, Trustee
(Executive Editor, NBT, Delhi)
Shri Raunak Mahajan, Trustee
(Industrialist, Pune)
Shri Akhilesh Jain, Managing Trustee
(Industrialist, Delhi)

भारतीय ज्ञानपीठ
Bharatiya Jnanpith

प्रवर परिषद नें निर्णय लेते हुये कहा कि तमिल देश कि एक बड़ी भाषा है और इसके बावजूद अब तक इस भाषा के सिर्फ दो लेखकों पीवी अखिलंदम (1975) और डी॰ जयकान्तन (2002) को ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। आर॰ वैरामुथु को दिया गया यह सम्मान उस अंतराल को भरने का काम करेगा।

ज्ञानपीठ पुरस्कार भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान है, जो भारतीय भाषाओं में उत्कृष्ट साहित्य सृजन करने वाले लेखकों को प्रदान किया जाता है। इस सम्मान के अंतर्गत 11 लाख रुपये की राशि, वाग्देवी (सरस्वती) की कांस्य प्रतिमा और प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया जाता है।

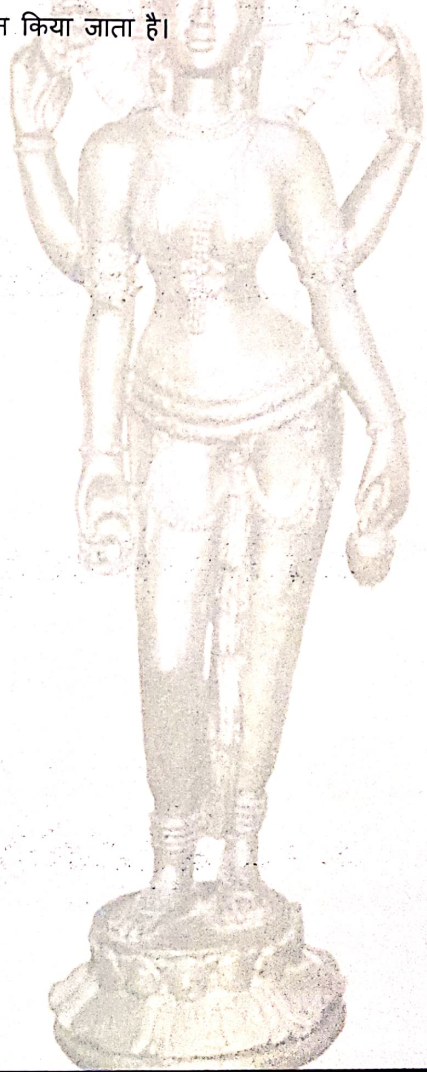

— आर॰ एन॰ तिवारी
महाप्रबंधक, भारतीय ज्ञानपीठ

18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली-110 003
फोन : 011-2462 6467, 4152 3423
18, Institutional Area, Lodhi Road, New Delhi-110003
e-mail: sales@jnanpith.net, marketing@jnanpith.net, nayagyanoday@gmail.com, bjnanpith@gmail.com
www.jnanpith.net